पेड़-पौधे हमारा जीवन

16

(पर्यावरण लेख)

कल्पना कीजिए कि पृथ्वी पर जंगल न होते, बस्तियों में और उनके बाहर पेड़-पौधे न होते, पहाड़ों पर हरियाली न होती तो यह सब कुछ कैसा लगता? सच तो यह है कि तब पृथ्वी पर जीवन ही संभव नहीं होता। कारण स्पष्ट है कि जीवधारियों के जीवन के लिए वनस्पतियाँ बहुत जरूरी हैं।

जब मानव-जीवन का विकास हुआ, उससे पहले पृथ्वी पर वनस्पति-जगत का विकास हो चुका था। तब मानव ने पेड़-पौधों से भोजन ही प्राप्त नहीं किया, बल्कि उनका *आश्रय* भी प्राप्त किया। वह वृक्षों के *तले* रहता था। उनकी छाल और उनके पत्तों से अपना तन ढकता था। उनके पत्ते, कलियाँ, कंद-मूल और फल-फूल खाकर वह अपनी *भूख* शांत करता था। उनकी टहनियों और पत्तों से उसने अपने *आश्रय-स्थल* बनाए। आग का आविष्कार हो जाने पर उसने वृक्षों की लकड़ी जलाकर ठंड से अपनी रक्षा की और भोजन की विधि में सुधार किया। कहने का *तात्पर्य* यह है कि आदिकाल से ही पेड़-पौधे मानव-जीवन के *अभिन्न* अंग और उपकारी बंधु रहे हैं।

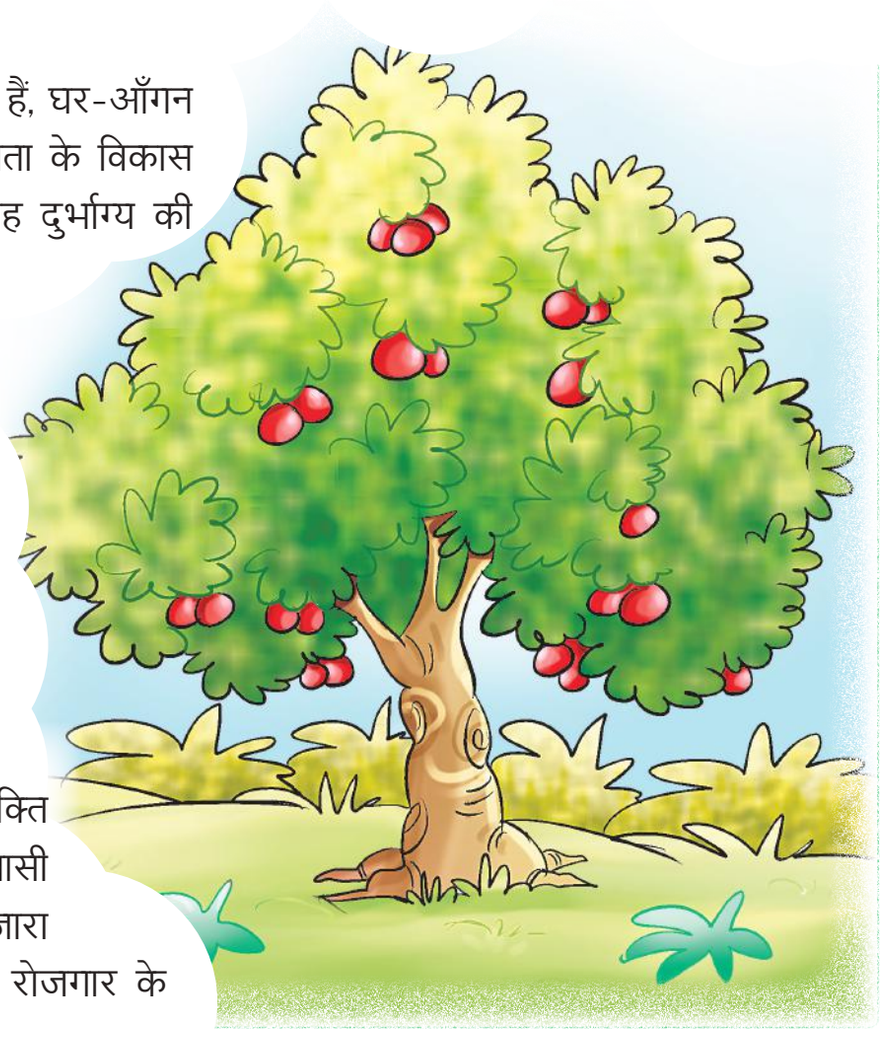

वृक्ष प्रकृति की शोभा हैं, धरती की शोभा हैं, घर-आँगन की शोभा हैं। पेड़-पौधों ने मानव-सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, परंतु यह दुर्भाग्य की बात है कि आज मानव-सभ्यता का विकास चोटी को छू रहा है, वनों की अंधाधुंध कटाई ने वृक्षों के अस्तित्व के लिए अभूतपूर्व खतरा उत्पन्न कर दिया है। अमूल्य वन-संपदा खत्म हो रही है, उनमें *निर्भय* विचरण करने वाले दुर्लभ जंतुओं के जीवन को खतरा उत्पन्न हो गया है और कई दुर्लभ जंतु-जातियाँ विनाश के *कगार* पर खड़ी हैं।

वृक्ष आवश्यक हैं। ये हमें रसीले और शक्ति से भरपूर स्वादिष्ट फल देते हैं। वनवासी लोग वृक्षों के कंद-मूल और फलों पर गुजारा करते हैं। शहरों में ये फल आय और रोजगार के

साधन हैं। फलों का और इनके उत्पादों का आयात-निर्यात भी होता है। वृक्ष हरियाली देते हैं, छाया देते हैं, धरती के तापमान को कम करते हैं, वायु को शुद्ध करते हैं और हमें प्राणवायु देते हैं। इनकी जड़ काम आती है; छाल काम आती हैं; फूल, फल, बीज और पत्तियाँ भी काम आती हैं। इनके तने से मकान के लिए दरवाज़े, चौखटें तथा कड़ियाँ बनती हैं और ड्रॉइंग-रूम के लिए तरह-तरह का फर्नीचर बनता है। बहुत-से प्रकार के वस्तुओं की पैकिंग के लिए लकड़ी भी इन्हीं से प्राप्त होती है। बहुत-से वृक्षों से लाख, गोंद, रबर, बेरोजा और तारपीन का तेल मिलता है। वृक्ष औषधियों के भंडार हैं। नीम, आँवला, बहेड़ा, हरड़, अमलतास, अशोक आदि से औषधियाँ बनती हैं। आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा तो जड़ी-बूटियों के बिना अधूरी है। वृक्षों की सूखी टहनियाँ और सूखी लकड़ी ईंधन के काम आती हैं। हरी-सूखी पत्तियों से अच्छी खाद बनती है।

वृक्षों की जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकती हैं। इनके कटने से पहाड़ खिसकने लगते हैं, भू-स्खलन होने लगता है। वृक्षों के न होने से उचित मात्रा में वर्षा नहीं होती। पर्याप्त वर्षा न होने से खेती नहीं हो सकती। मनुष्यों और पशुओं के लिए पानी की *समस्या* हो जाती है। वृक्षों का सफ़ाया होने पर रेगिस्तान सुरसा के मुँह की तरह बढ़ने लगते हैं। मरुस्थल के निवासियों का जीवन बहुत ही *कष्टकारी* होता है।

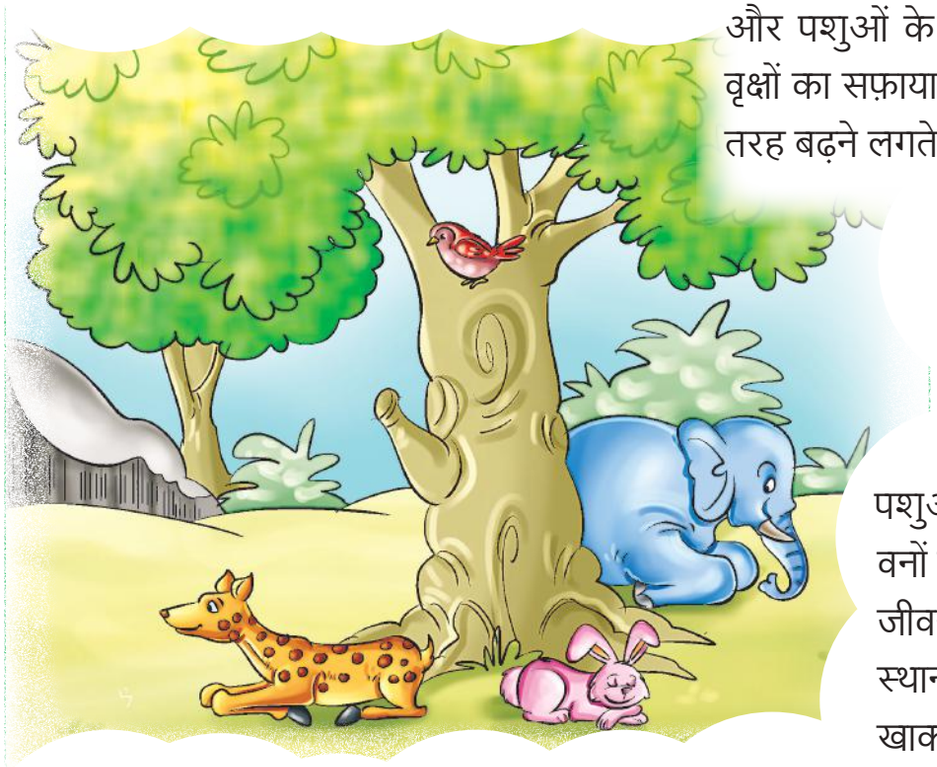

जहाँ वन होते हैं, वहाँ पशु-पक्षी भी पाए जाते हैं। ये प्रकृति में संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। सच तो यह है कि वनों से पशुओं की रक्षा होती है और पशुओं से वनों की। वन पृथ्वी के सभ्य समाज से दूर जीवन बिताने वाले वनवासियों के रहने का स्थान हैं। वे वनों में कंद-मूल, फल-फूल खाकर और आवश्यकतानुसार वन्य-जंतुओं का शिकार कर तथा थोड़ी-बहुत खेती करके अपना गुजर-बसर करते हैं। वृक्षों से इनका बहुत पुराना *नाता* है। वनों में वृक्षारोपण की जरूरत नहीं होती। वहाँ तो प्राकृतिक तौर पर वृक्षों का प्रजनन और संहार होता रहता है।

परंतु मनुष्य के लोभ का अंत नहीं होता। उसकी सर्वभक्षी भूख का भी अंत नहीं होता। उसने प्रकृति की इस अक्षय संपदा को नष्ट करने का मानो बीड़ा उठाया हुआ है। विकसित देशों के पास अपार धन है। उनकी गिद्ध-दृष्टि विकासशील और अविकसित देशों की *अक्षय* वन-संपदा पर पड़ी। उन्होंने लकड़ी के मुँहमाँगे दाम देने का लालच दिया। उन्हें अपने ड्रॉइंग-रूमों को सजाने के लिए, भवन-निर्माण के लिए, भारी-भारी

नौकाएँ और जहाज बनाने के लिए, पैकिंग-केसिंग के लिए और ऐसे ही अनगिनत कार्यों के लिए हर तरह की लकड़ी चाहिए थी। उनके देश में लकड़ी, प्रथम तो पर्याप्त मात्रा में मिलती ही नहीं और अगर मिलती भी है, तो वे अपनी वन-संपदा नष्ट क्यों करें, जबकि उनके पास दूसरे देशों से लकड़ी खरीदने के लिए पर्याप्त धन है। फिर भी, उनकी माँग पर उचित और अनुचित तरीकों से विकासशील तथा अविकसित देशों में अंधाधुंध वनों को काटना शुरू हुआ और यह सिलसिला आज तक जारी है। कुछ डॉलरों, पाउंडों या रुपयों के प्रलोभन में इतनी बड़ी हानि! यह अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना नहीं तो और क्या है? जो हाथ भोजन देता है, क्या यह उसे ही काट देने जैसी मूर्खता नहीं है?

हमारे पूर्वजों ने वृक्षों के महत्व को समझा था। उन्होंने अपने देश की वन-संपदा का *संरक्षण* ही नहीं, *संवर्धन* भी किया। उन्होंने देश में पाई जाने वाली प्रत्येक वनस्पति के औषधीय गुणों के बारे में परीक्षण किए। सोम जैसी संजीवनी वनस्पति की प्रशंसा में प्रार्थना-मंत्रों की रचना की। तुलसी, कदली, आँवला, बहेड़ा, हरड़, कदंब, अशोक, बिल्व, वट, पीपल, शाल्मली आदि वृक्षों की पूजा-सेवा का *विधान* बनाया। नीम के बारे में घोषित किया कि 'सर्वरोगहरो निम्बः'। वृक्ष लगाने को पुण्य और उसे काटने को पाप कहा गया। छोटे पेड़ को काटना शिशु-हत्या जैसा *जघन्य* अपराध माना गया है।

भारत में वनों के विनाश का सिलसिला अंग्रेजों के आने के बाद शुरू हुआ। उन्होंने आबनूस और महोगनी जैसी कीमत लकड़ी का तो सफाया ही कर दिया। रेल के स्लीपरों के लिए शीशम ओर सागौन की अंधाधुंध कटाई हुई। तारपीन का तेल और बेरोजा प्राप्त करने के लिए पहाड़ों पर देवदार के स्थान पर *सत्यानाशी* चीड़ लगाया गया। तब जगह-जगह सघन और विशाल वन-प्रदेशों के अतिरिक्त कहीं-कहीं गाँव का अपना वन-खंड भी होता था। इनकी सुरक्षा का भार गाँवों की पंचायतों पर था। आज स्थिति यह हो गई है कि ये वन-खंड उजाड़ हो गए हैं। स्थानीय दादा लोगों, ठेकेदारों और अधिकारी वर्ग की मिलीभगत से धड़ाधड़ पेड़ काटे जा रहे हैं। मुट्ठी-भर *स्वार्थी* लोगों की चाँदी बन रही है। सरकारी वन-संपत्ति सरेआम लुट रही है।

परंतु हर बात की हद होती है। उत्तराखंड के पर्वतीय लोगों ने, विशेषकर वहाँ की महिलाओं ने 'चिपको आंदोलन' चलाकर इस लूट को चुनौती दी। गांधी जी के हरिजन उद्धार, *स्वदेशी*-प्रचार और विदेशी

बायकाट, गौ-रक्षा, खादी-प्रचार जैसे आंदोलनों के बाद या तो विनोबा जी के 'भू-दान आंदोलन' ने देश-विदेश के लोगों का ध्यान आकर्षित किया या वनों और पर्यावरण की रक्षा के उद्देश्य से किए गए 'चिपको आंदोलन ने। जोधपुर राज में तीन सौ वर्ष पूर्व विश्नोई जाति के लोगों ने भी खेजड़े के वृक्षों की रक्षा के लिए ऐसा ही आंदोलन चलाया था। आश्चर्य की बात है कि आज लोगों और सरकार का ध्यान वन-संरक्षण तथा वृक्षारोपण कार्यक्रम की ओर गया है। आशा है कि हम अपने इन परम उपकारी बंधुओं का संरक्षण तथा सवंर्धन करेंगे तथा देश के प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखेंगे। वृक्ष को एकदम काटने की अपेक्षा उसकी आयु भर उससे ऑक्सीजन, शुद्ध वायु, फल-फूल, बीज-तेल और लकड़ी प्राप्त करते रहने में तथा सूखने के बाद उससे सूखी *काष्ठ* प्राप्त करने में अधिक लाभ है। उसे एकदम काटना तो ऐसा ही मूर्खतापूर्ण कार्य है जैसा कि एक बार में ही सारे अंडे प्राप्त करने की आशा में मुर्गी का पेट चीर देना।

विश्व की दिन-प्रतिदिन बढ़ती जनसंख्या ने भी वनों और वृक्षों के विनाश में कम भूमिका नहीं निभाई है। भारत की आबादी पिछले *चार दशकों* में लगभग दोगुनी हो गई है। वनों को काटकर कृषि-योग्य भूमि का *विस्तार* हुआ है। चरागाह बनाए गए हैं। *ईंधन* की समस्या बढ़ी है। इस सबके लिए वृक्षों पर कुल्हाड़ा बजा है। जो हुआ, सो हुआ। अब अपना नैतिक और *धार्मिक* कर्त्तव्य समझकर वृक्षों का संरक्षण और संवर्धन होना चाहिए। सूखा, बाढ़, प्रदूषण, वर्षा की कमी आदि के रूप में वृक्ष काटने के दुष्परिणाम हम भोगने लगे हैं। पर ये तो मात्र चेतावनियाँ हैं। यदि हम समय रहते नहीं *चेते,* तो मानवजाति का *अस्तित्व* ही खतरे में पड़ सकता है।

—संकलित

शब्द-अर्थ

आश्रय — आसरा *(Anchor)*,
क्षुधा — भूख *(hunger)*,
तात्पर्य — मतलब *(meaning)*,
निर्भय — बिना डर के *(without fear)*,
कगार — द्वार *(gate)*,
उत्पाद — उत्पन्न वस्तु *(born thing)*,
नाता — संबंध *(relation)*,
अपरिचित — असीमित *(unknown)*,
संरक्षण — रक्षा करना *(to save)*,
विधान — विधि *(rules)*,
चेते — होश में आए *(get up)*,
अंग — हिस्सा *(part)*,
शीत — ठंडक *(cold)*,
लोभ — लालच *(greedy)*,
तले — नीचे *(under)*,
आश्रय-स्थल — रहने की जगह *(anchorplace)*,
अभिन्न — अलग न होने वाले *(no different)*,
दुर्गम — कठिनता से उपलब्ध *(to difficult arrangement)*,
समस्या — परेशानी *(trouble)*,
अक्षय — कभी समाप्त न होने वाली *(never ending)*,
संवर्धन — वृद्धि करना *(religional)*,
दशक — दस वर्ष का समय *(ten years)*,
धार्मिक — धर्म से संबंध रखने वाला *(regional)*,
उत्पन्न — पैदा *(born)*,
ईंधन — आग *(fire)*,
निर्माण — बनाना *(make)*,

जघन्य — घोर *(horrid)*,
स्वार्थी — लालची *(cheater)*,
स्वदेशी — अपने देश का *(self country)*,
चार दशक — चालीस वर्ष *(forty years)*,
अस्तित्व — जीवन *(life)*।
सत्यनाशी — नाश करने वाला *(destroyer)*,
सरेआम — खुले रूप से *(to open)*,
काष्ठ — लकड़ी *(wood)*,
विस्तार — फैलाव *(spread)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

कल्पना	पृथ्वी	जंगल	पेड़-पौधे	जीवन
वनस्पतियाँ	विकास	भोजन	आश्रय	आविष्कार

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) जीवधारियों के जीवन के लिए क्या जरूरी है?
(ख) प्रकृति, धरती और घर-आँगन की शोभा क्या हैं?
(ग) वृक्षों का सफ़ाया होने पर सुरसा के मुँह की तरह क्या बढ़ने लगा है?
(घ) वृक्षों का कौन-सा भाग मिट्टी के कटाव को रोकता है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) वनस्पति जगत से आप क्या समझते हैं?
☐ पेड़-पौधों की दुनिया ☐ पशु-पक्षियों की दुनिया ☐ इन सभी की दुनिया

(ख) पृथ्वी पर जीवन कब संभव नहीं होता?
☐ पृथ्वी पर पेड़-पौधे न होते हुए। ☐ पहाड़ों पर हरियाली न होती। ☐ इन सभी के न होते हुए।

(ग) मानव-जीवन से पहले पृथ्वी पर किसका विकास हुआ?
☐ पशु जगत का ☐ पक्षी जगत का ☐ वनस्पति जगत का

(घ) वृक्ष किसकी शोभा हैं?
☐ धरती की ☐ घर-आँगन की ☐ इन सभी की

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा तो ..... के बिना अधूरी है।
(ख) हरी सूखी पत्तियों से ..... बनती है।
(ग) वृक्ष लगाने को ..... और उसे काटने को ..... कहा गया।
(घ) वनों में ..... जरूरत नहीं होती।
(ङ) हमारे पूर्वजों ने देश की वन-संपदा का ..... ही नहीं, ... भी किया।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत वाक्यों के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) जब मानव-जीवन का विकास हुआ, उससे पहले पृथ्वी पर वनस्पति जगत का विकास हो चुका था। ☐

(ख) वृक्ष प्रकृति की शोभा हैं, धरती की शोभा हैं परंतु घर-आँगन की शोभा नहीं है। ☐

(ग) जब मानव-जीवन का विकास हुआ, उससे पहले पृथ्वी पर वनस्पति जगत का विकास नहीं हुआ था। ☐

(घ) वृक्षों की जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकती हैं। ☐

(ङ) भारत में वनों के विनाश का सिलसिला अंग्रेजों के आने के बाद शुरू हुआ। ☐

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मानव-सभ्यता के विकास में किसका महत्वपूर्ण योगदान है?

(ख) वृक्ष कैसे दानी हैं?

(ग) कहाँ के निवासियों का जीवन बहुत कष्टकारी होता है?

(घ) नीम के बारे में क्या घोषित किया गया था?

(ङ) भूदान आंदोलन किसका था?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए–

(क) भूगोल + इक = भूगोलिक

(ख) वर्ष + इक = ...

(ग) अर्थ + इक = ...

(घ) दिन + इक = ...

(ङ) राजनीति + इक = ...

(च) प्रकृति + इक = ...

(छ) सप्ताह + इक = ...

(ज) इतिहास + इक = ...

(झ) मास + इक = ...

(ञ) धर्म + इक = ...

2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेष्य और विशेषण को छाँटकर लिखिए–

वाक्य	विशेष्य	विशेषण
(क) पेड़-पौधे हमारे उपकारी बंधु रहे हैं।	.....	.....
(ख) वृक्ष अमित दानी हैं।	.....	.....
(ग) पेड़-पौधों से हमें शुद्ध वायु मिलती है।	.....	.....
(घ) हरी-सूखी पत्तियों से उत्तम खाद बनती है।	.....	.....
(ङ) भारत की आबादी चार दशक में दोगुनी हो गई है।	.....	.....

क्रियात्मक गतिविधि

- यदि पृथ्वी पर पेड़-पौधे न होते, तो क्या होता? सोचकर लिखिए।
- 'चिपको आंदोलन' पर एक अनुच्छेद लिखकर अपने शिक्षक/शिक्षिका को दिखाइए।